



Total No. of Printed Pages – 3

APPM
PANCHPARGANIA LANGUAGE AND LITERATURE

पंचपरगनिया भाषा और साहित्य

SUBJECT CODE : 17

विषय कोड : 17

PAPER – IX

पत्र – IX

Full Marks : 100

Time : 3 Hours

पूर्णांक : 100

समय : 3 घण्टे

निर्देश : खाँधा-“क”, खाँधा-“ख” आर खाँधा-“ग” तिन खाँधा लेक पुछल सवालेक जबाप देल निरदेस आधारे लिखा ।

Marks
अंक

खाँधा – “क”

हेंठे देल मइधे कन' पाँच सवालेक जबाप लिखा :

10 × 5 = 50

- | | |
|---|----|
| 1. पंचपरगनिया स्वर बरन' केर बाचिक करा । | 10 |
| 2. पंचपरगनिया बेअंजन बरन' केर पंचम आछर केर लिखित रूपे काभुमिका आहे ? बरनिमा करा । | 10 |
| 3. पंचपरगनिया लिंग भेद केर बाचिक उदाहरन दे के करा । | 10 |
| 4. पंचपरगनिया बिसेसन केर भेद के निमुद (उदाहरन) दे कहन लिखा । | 10 |
| 5. पंचपरगनिया कारक परसरग' केर बाचिक करा । | 10 |
| 6. पंचपरगनिया माहान एक बचन लेक बहुबचन बनाएक भेद के लिखा । | 10 |
| 7. पंचपरगनिया उपसरग' आर परतए माहान का तफाईत आहे ? उदाहरन दे कहन बाखान करा । | 10 |
| 8. पंचपरगनिया माहान संइगा के-के कहल जाएगा ? पंचपरगनिया माहान कन' पाँच टा संइगा सबद' लेक किरिआ रूप के लिखु । | 10 |

APPM

Paper-IX


खाँधा – “ख”

हेंठे देल मइधे कन' तिन सवालेक जबाप लिखा :

10 × 3 = 30

9. पंचपरगनिया पइद साहित कर बिकास काथा के खाट' खुँटिए लिखा । 10
10. पंचपरगनिया निबंध चाहे नाटक साहितेक काथा के छटे-खाट' लिखा । 10
11. ल'क-कहनि के-के कहएँ ? पंचपरगनिया ल'क कहनिए इतिहास काथा लुकाल आहे, बाखान करां । 10
12. पंचपरगनिया कबि बरजुराम चाहे राजकिसर सिंह केर किरति के उखराए के लिखु । 10
13. हेंठे देल पइद अंस केर बेइखा करा : 10

“कति खने फुटए हरदि रे झिंगा फुल ?

कति खने फुटए लाल गेंदा फुल ?

गमकए । ”

चाहे

“इ घरेक लग गिला कहाँ-कहाँ गेला ह'

तेलाइए तेल दे के घघि झाड़े गेला ह' ।”

14. पंचपरगनिया कहनि चाहे उपनेआस साहित रचना माहान लेखक केर जगदान के लिखु । 10

खाँधा – “ग”

हेंठे देल सवालेक जबाप लिखा :

15. हेंठे देल मइधे कन'एकता माहान निबंध लिखु : 12

(क) फदिखेइल

(ख) पुसपरब

(ग) दासम झारना



16. हेंठे देल गइद अंस टा केर पंचपरगनिया माहान अनुवाद करा :

8

“विद्यार्थी जीवन में अनुशासन का बहुत ही महत्त्व है। अनुशासन ही विद्यार्थी की उन्नति का एक मात्र द्वार है। इसी से समाज के साथ-साथ उन्नत राष्ट्र का निर्माण होता है। आज के समय में विद्यार्थियों में अनुशासन का हास होता हुआ दीखाई दे रहा है, जो कि चिन्ता का विषय है। कुछ छात्र बिना पढ़ाई-लिखाई के अगली कक्षा जाना चाहते हैं या फिर गलत तरीके से परीक्षा में उत्तीर्ण होना चाहते हैं। स्कूल तथा कॉलेजों में अनुशासनहीनता आज साफ नजर आती है। इस अनुशासनहीनता के लिए कहीं-न-कहीं हमारी शिक्षा-प्रणाली भी दोषपूर्ण है। माता-पिता भी काम-काजी होने के कारण आज समाज में हर स्तर पर अनुशासन की कमी दीखाई देती है। विद्यार्थियों में अनुशासित रहने की भावना जाग्रत करने के लिए आवश्यक है कि शिक्षा पद्धति के हरेक पहलू का सुधार हो। समय-समय पर अभिभावकों से मिलकर छात्रों में अनुशासनहीनता को दूर किया जा सकता है। इसमें शिक्षक एक अहम भूमिका निभा सकते हैं।”